3

रक्षा में हत्या

पाठ-प्रवेश

बच्चे मन के सच्चे होते हैं। वे सदा ही स्वार्थ की भावना से दूर होते हैं। उनका निश्छल मन कभी किसी का बुरा नहीं चाहता, सदा सबकी मदद करने के लिए तैयार रहता है। किंतु कभी-कभी उनके हाथों कुछ ऐसा हो जाता है जो सामने वाले के लिए नुकसानदायक सिद्ध होता है।

केशव के घर में छज्जे के ऊपर एक चिड़िया ने अंडे दिए थे। केशव और उसकी बहन श्यामा दोनों बड़े ध्यान से चिड़ियों को वहाँ आते-जाते देखा करते। सवेरे दोनों आँखें मलते-मलते छज्जे के सामने पहुँच जाते और चिड़ा या चिड़िया या दोनों को वहाँ बैठा पाते। उनको देखने में दोनों बच्चों को पता नहीं क्या मज़ा आता था! दोनों के मन में भाँति-भाँति के प्रश्न उठते। अंडे कितने बड़े होंगे? किस रंग के होंगे? कितने होंगे? उनमें से बच्चे बाहर कैसे निकलेंगे? बच्चों के पर कैसे होंगे? घोंसला कैसा है? किंतु इन सवालों का जवाब देने वाला कोई नहीं था। माँ घर के काम-धंधों में व्यस्त थीं और बाबू जी पढ़ने-लिखने में। दोनों बच्चे आपस में ही सवाल-जवाब करके अपने मन को संतुष्ट कर लिया करते थे।

श्यामा— भैया, क्या बच्चे निकलकर फुर्र से उड़ जाएँगे?

केशव—(*विद्वानों के से गर्व से*) नहीं री पगली, पहले पर निकलेंगे। बगैर परों के बेचारे कैसे उड़ेंगे?

श्यामा— बच्चों को क्या खिलाएगी बेचारी?

केशव के पास इस सवाल का कोई जवाब नहीं था।

इस तरह तीन-चार दिन बीत गए। दोनों बच्चों की जिज्ञासा दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। दोनों अंडों को देखने के लिए बहुत उत्सुक थे। उन्होंने अनुमान लगाया कि अब बच्चे ज़रूर निकल आए होंगे। बच्चों के भोजन का सवाल अब उनके सामने आ खड़ा हुआ। चिड़िया बेचारी इतना दाना कहाँ से लाएगी कि सारे बच्चों का पेट भर सके। बेचारे बच्चे भूख के मारे चूँ-चूँ करके मर जाएँगे।

चारे की समस्या का खयाल आते ही दोनों घबरा उठे। दोनों ने यह निर्णय लिया कि छज्जे पर थोड़ा-सा दाना रख देंगे। श्यामा खुश होकर बोली— तब तो चिड़िया को चारे के लिए कहीं उड़कर जाना भी नहीं पड़ेगा, है न?

शब्दार्थ

संतुष्ट—जिसे संतोष हो गया हो; **जिज्ञासा**—जानने की अभिलाषा, कौतूहल; **अनुमान**—अटकल, अंदाज़ा

Scanned with CamScanner

केशव— नहीं, तब क्यों जाएगी?

श्यामा— भैया, बच्चों को धूप भी तो लगती होगी?

केशव का ध्यान इस परेशानी की ओर नहीं गया था। वह बोला— परेशानी ज़रूर हो रही होगी। बेचारे प्यास के मारे तड़प रहे होंगे। ऊपर कोई छाया भी तो नहीं है।

आखिर यह फ़ैसला लिया गया कि घोंसले के ऊपर कपड़े की छत बना देनी चाहिए। पानी की प्याली और थोड़े-से चावल रख देने का प्रस्ताव भी मंजूर हो गया।

दोनों बच्चे बड़े मन से सब काम करने लगे। श्यामा माँ की आँख बचाकर मटके से चावल निकाल लाई। केशव ने पत्थर की प्याली का तेल चुपके से ज़मीन पर गिरा दिया और खूब साफ़ करके उसमें पानी भर दिया।

अब चाँदनी के लिए कपड़ा कहाँ से लाएँ? फिर ऊपर छड़ियों के बिना कपड़ा ठहरेगा कैसे और छड़ी खड़ी होंगी कैसे?

केशव बड़ी देर तक इसी उधेड़बुन में रहा। आखिरकार उसने यह मुश्किल भी हल कर दी। श्यामा से बोला— जा, जाकर कूड़ा फेंकने वाली टोकरी उठा ला। माँ को मत दिखाना।

श्यामा— वह तो बीच में से फटी हुई है। उसमें से धूप नहीं जाएगी?

केशव झुँझलाकर बोला— तू टोकरी तो ला, मैं उसका सुराख बंद करने की कोई तरकीब सोचता हूँ।

श्यामा दौड़कर टोकरी उठा लाई। केशव ने उसके सुराख में थोड़ा-सा कागज़ ठूँस दिया और फिर टोकरी को एक टहनी से टिकाकर बोला— देख ऐसे ही घोंसले पर इसकी आड़ दूँगा। तब कैसे जाएगी धूप? श्यामा ने दिल में सोचा, भैया कितने चालाक हैं।

गर्मी के दिन थे। बाबू जी दफ़्तर गए हुए थे। माँ दोनों बच्चों को कमरे में सुलाकर खुद सो गई थीं। लेकिन बच्चों की आँखों में आज नींद कहाँ? माँ को बहकाने के लिए दोनों दम रोके आँखें बंद किए मौके का इंतज़ार कर रहे थे। ज्यों ही मालूम हुआ कि माँ अच्छी तरह सो गई हैं, दोनों चुपके से उठे और बहुत धीरे से दरवाज़े की सिटकनी खोलकर बाहर निकल आए। अंडों की रक्षा करने की तैयारियाँ होने लगीं। केशव कमरे में से एक स्टूल उठा लाया, लेकिन जब उससे काम न चला, तो नहाने की चौकी लाकर स्टूल के नीचे रखी और डरते-डरते स्टूल पर चढ़ा। श्यामा दोनों हाथों से स्टूल पकड़े हुए थी। स्टूल की चारों टाँगें बराबर न होने के कारण जिस ओर अधिक दबाव पड़ता था, ज़रा-सा हिल जाता था। उस वक्त केशव को कितनी परेशानी होती थी, यह उसी का दिल जानता था। दोनों हाथों

शब्दार्थ

प्रस्ताव—विचार के लिए प्रस्तुत कोई सुझाव

Scanned with CamScanner

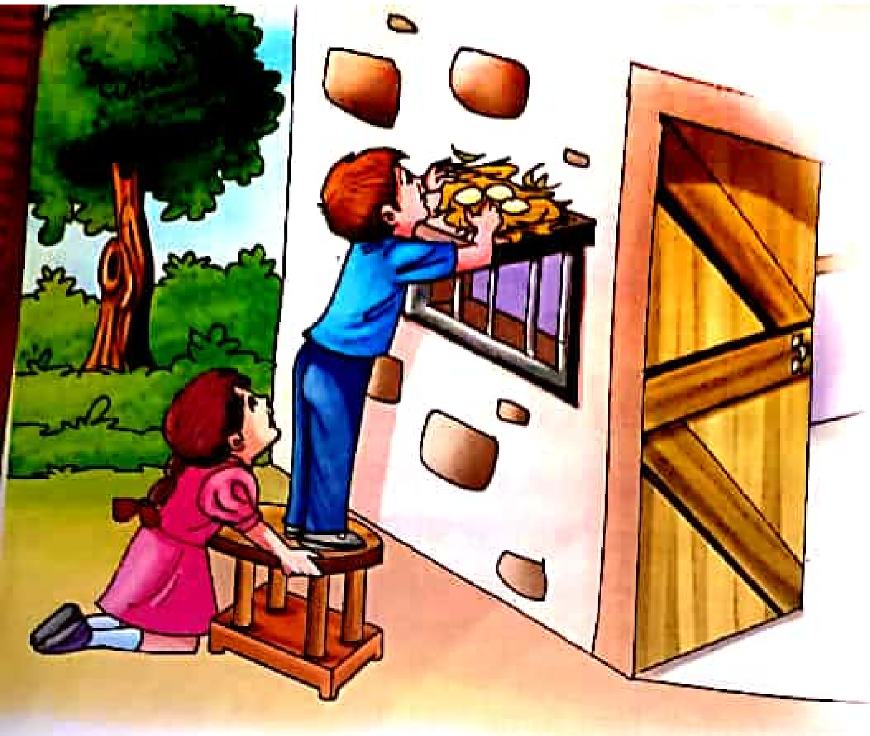

छज्जे को पकड़कर श्यामा को दबी आवाज़ में डाँटता भी जा रहा था— अच्छी तरह पकड़, वरना नीचे उतरकर बहुत मारूँगा।

मगर बेचारी श्यामा का दिल तो ऊपर छज्जे पर था। बार-बार उसका ध्यान उधर चला जाता और हाथ ढीले पड़ जाते।

जैसे ही केशव ने छज्जे पर हाथ रखा, दोनों चिड़ियाँ उड़ गईं। केशव ने देखा, छज्जे पर थोड़े-से तिनके बिछे हुए हैं और उन पर तीन अंडे पड़े हैं। जैसे घोंसले उसने पेड़ों पर देखे थे, वैसा कोई घोंसला नहीं है। श्यामा ने नीचे से पूछा— कितने बच्चे हैं भैया?

केशव— तीन अंडे हैं, अभी बच्चे नहीं निकले।

श्यामा— ज़रा मुझे भी दिखा दो भैया, कितने बड़े हैं?

केशव— दिखा दूँगा, पहले ज़रा चिथड़े ले आ, नीचे बिछाने के लिए। बेचारे अंडे तिनकों पर पड़े हैं।

श्यामा दौड़कर पुरानी धोती फाड़कर एक टुकड़ा ले आई। केशव ने झुककर कपड़ा ले लिया, उसके कई तह करके उसने एक गद्दी बनाई और उसे तिनकों पर बिछाकर धीरे-से तीनों अंडे उस पर रख दिए।

श्यामा ने फिर कहा— मुझे भी दिखा दो भैया।

केशव— दिखा दूँगा, पहले ज़रा वह टोकरी दे दो, ऊपर छाया कर दूँ।

श्यामा ने टोकरी नीचे से थमा दी और बोली— अब तुम उतर आओ, मैं भी देखूँगी।

केशव ने टोकरी को एक टहनी से टिकाकर कहा— जा, दाना और पानी की प्याली ले आ, मैं उतर आऊँ तो दिखा दूँगा।

श्यामा प्याली और चावल भी ले आई। केशव ने टोकरी के नीचे दोनों चीज़ें रख दीं और आहिस्ता से उतर आया।

श्यामा ने गिड़गिड़ाकर कहा— अब मुझे भी चढ़ा दो भैया।

केशव— तू गिर पड़ेगी।

श्यामा— नहीं गिरूँगी भैया, तुम नीचे से पकड़कर रखना।

शब्दार्थ

चिथड़े—फटे-पुराने कपड़े

Scanned with CamScanner

केशव— न-भई-न, कहीं तू गिर-गिरा गई तो माँ मेरी चटनी ही बना देंगी। कहेंगी कि तूने ही चढ़ाया था। क्या करेगी देखकर? अब अंडे बड़े आराम से हैं। जब बच्चे निकलेंगे, तो हम उन्हें पालेंगे।

दोनों चिड़ियाँ बार-बार छज्जे पर आतीं मगर बग़ैर बैठे ही उड़ जातीं। केशव ने सोचा, शायद हम लोगों के डर के मारे नहीं बैठ रही हैं। वह स्टूल उठाकर कमरे में रख आया, चौकी जहाँ की थी, वहाँ रख दी।

श्यामा ने आँखों में आँसू भरकर कहा— तुमने मुझे नहीं दिखाया, मैं माँ से कह दूँगी।

केशव— माँ से कहेगी तो बहुत मारूँगा, समझी!

श्यामा— तो तुमने मुझे क्यों नहीं दिखाया?

केशव— और गिर पड़ती तो चार सिर हो जाते!

श्यामा— हो जाते, तो हो जाते। देख लेना मैं कह दूँगी।

इतने में कोठरी का दरवाज़ा खुला और माँ ने धूप से आँखों को बचाते हुए कहा— तुम दोनों बाहर कब निकल आए? मैंने कहा था न कि दोपहर को मत निकलना! किवाड़ किसने खोला?

किवाड़ केशव ने खोला था लेकिन श्यामा ने यह बात माँ से नहीं कही। उसे डर था कि माँ भाई को मारेंगी। केशव दिल में काँप रहा था कि कहीं श्यामा बता न दे। अंडे नहीं दिखाए थे न, इसलिए अब उसको श्यामा पर विश्वास न था। श्यामा सिर्फ़ भाई के प्यार के कारण चुप थी या इस कसूर में हिस्सेदार होने की वजह से, इसका फ़ैसला नहीं किया जा सकता। शायद दोनों ही बातें थीं।

माँ ने दोनों को डाँट-डपटकर फिर कमरे में बंद कर दिया और आप धीरे-धीरे उन्हें पंखा झलने लगीं। अभी सिर्फ़ दो बजे थे। बाहर तेज़ लू चल रही थी। दोनों बच्चों को नींद आ गई।

चार बजे अचानक श्यामा की नींद खुली। किवाड़ खुले हुए थे। वह दौड़ी हुई छज्जे के पास आई और ऊपर की तरफ ताकने लगी। टोकरी का पता न था। संयोग से उसकी नज़र नीचे गई और वह उलटे पाँव दौड़ती हुई कमरे में जाकर ज़ोर से बोली— भैया, अंडे तो नीचे पड़े हैं, केशव घबराकर उठा और दौड़कर बाहर आया। वहाँ उसने देखा कि तीनों अंडे नीचे टूटे पड़े हैं और उनसे कोई चूने की-सी चीज़ बाहर निकल आई है। पानी की प्याली भी एक तरफ़ टूटी पड़ी है।

उसके चेहरे का रंग उड़ गया। सहमी हुई आँखों से ज़मीन की ओर देखने लगा।

श्यामा ने पूछा— बच्चे कहाँ उड़ गए भैया?

केशव ने करुण स्वर में कहा— अंडे तो फूट गए।

श्यामा— और बच्चे कहाँ गए?

शब्दार्थ

लू—गरम हवा

Scanned with CamScanner

केशव— तेरे सिर में। देखती नहीं है, अंडों से उजला-उजला पानी निकल आया है। वही दो-चार दिन में बच्चे बन जाते।

माँ ने आते ही पूछा— तुम दोनों वहाँ धूप में क्या कर रहे हो?

श्यामा ने कहा— माँ! चिड़िया के अंडे टूटे पड़े हैं।

माँ ने जब टूटे हुए अंडों को देखा तो गुस्से से बोलीं— तुम लोगों ने अंडों को छुआ होगा?

अब तो श्यामा को भैया पर ज़रा भी तरस नहीं आया। उसी ने शायद अंडों को इस तरह रख दिया कि वह नीचे गिर पड़े। इसकी सज़ा मिलनी चाहिए। बोली— इन्होंने अंडों को छेड़ा था माँ।

माँ ने केशव से पूछा— क्यों रे?

केशव भीगी बिल्ली बना खड़ा रहा।

माँ— तू वहाँ पहुँचा कैसे?

श्यामा— चौकी पर स्टूल रखकर चढ़े माँ!

केशव— तू स्टूल पकड़कर नहीं खड़ी थी?

श्यामा— तुम्हीं ने तो कहा था।

माँ— तू इतना बड़ा हो गया, तुझे अभी इतना भी नहीं मालूम कि छूने से चिड़ियों के अंडे गंदे हो जाते हैं। चिड़ियाँ फिर इन्हें नहीं सेतीं।

श्यामा ने डरते-डरते पूछा— तो क्या चिड़िया ने अंडे गिरा दिए हैं, माँ?

माँ— और क्या करती। केशव के सिर इसका पाप पड़ेगा। हाय, हाय, तीन जानें ले लीं दुष्ट ने।

केशव रोनी सूरत बनाकर बोला— मैंने तो सिर्फ़ अंडों को गद्दी पर रख दिया था, माँ!

माँ को हँसी आ गई। मगर केशव को कई दिनों तक अपनी गलती पर अफ़सोस होता रहा। अंडों की रक्षा करने के जोश में उसने उनका सत्यानाश कर डाला। इसे याद करके वह कभी-कभी रो पड़ता था। दोनों चिड़ियाँ वहाँ फिर कभी दिखाई नहीं दीं।

—प्रेमचंद

शब्दार्थ

अफ़सोस—दुख

Scanned with CamScanner

L 3 रक्षा में हत्या (लेखक- प्रेमचंद) std VI

प्रश्नों के उत्तर लिखें :-

Q1. केशव और श्यामा के घर में ऐसा क्या था जो उन्हें लुभा रहा था ?

Ans. केशव और श्यामा के घर के छज्जे पर चिड़िया ने अंडे दिए थे। केशव और श्यामा रोज़ सुबह उठकर छज्जे के सामने पहुँच जाते और चिड़ा या चिड़िया अर्थात नर और मादा दोनों को वहीं बैठा पाते। यह दृश्य उन्हें बहुत लुभाता था, और उनके मन में कई प्रश्न भी उठा करते।

Q2. केशव ने श्यामा को अंडे क्यों नहीं दिखाए?

Ans. श्यामा छोटी थी और स्टूल पर चढ़ने के बाद भी छज्जे तक नहीं पहुँच पाती। साथ ही स्टूल की टाँगें भी बराबर नहीं थीं इसलिए केशव को डर था कि अगर श्यामा गिर गई तो उसके सिर में गहरी चोट लग जाएगी। माँ यह देखकर केशव को मारेंगी, इसलिए उसने श्यामा को अंडे नहीं दिखाए।

Q.3. केशव और श्यामा ने चिड़िया की मदद कैसे की?

Ans. केशव और श्यामा ने अपनी बाल-सुलभ बुद्धि से चिड़िया की मदद के लिए कुछ उपाय किए। केशव ने धोती के टुकड़े को तह करके एक गद्दी बनाई और उसे तिनकों पर बिछाकर धीरे-से तीनों अंडे उस पर रख दिए। धूप से बचाने के लिए छोटी सी टोकरी को एक टहनी से टिकाकर अंडों पर छाया कर दी। श्यामा थोड़े से चावल ले आयी और तेल की प्याली को साफ़ कर उसमें पानी ले आयी। केशव ने उसे अंडों के पास रख दिया जिससे चिड़िया को दाना-पानी के लिए, अंडों को छोड़कर जाना नहीं पड़ेगा।

Q.4. चिड़िया ने अंडे नीचे क्यों गिरा दिए?

Ans. चिड़िया के अंडों को मनुष्य छू ले तो वे गंदे हो जाते हैं। केशव ने उन अंडों को हाथ से उठाकर फिर उन्हें कपड़े पर रख

Scanned with CamScanner

दिया था इसलिए चिड़िया ने अपने अंडों को गिरा दिया।

Q.5. माँ केशव और श्यामा को क्यों डाँट रही थी?

Ans. माँ ने उन दोनों को डाँटा क्योंकि अगर केशव अंडों को नहीं छूता तो कुछ दिनों के बाद उसमें से चिड़िया के बच्चे निकलते। माँ को इस बात पर गुस्सा आया कि केशव ने तीन जीवों की हत्या कर दी।

Q.6. श्यामा ने माँ से केशव की शिकायत क्यों की?

Ans. जब श्यामा ने देखा कि चिड़िया के अंडे नीचे टूट पड़े हैं, तब उसने यह समझा कि केशव ने अंडों को ठीक से नहीं रखा होगा इसलिए वे गिरकर टूट गए तो इसकी सज़ा केशव को मिलनी ही चाहिए। ऐसा सोचकर श्यामा ने माँ से केशव की शिकायत की।

Q.7. आशय स्पष्ट करें! —

श्यामा ने सोचा भैया कितने चालाक हैं।

— स्टूल पर चढ़ने के बाद केशव छज्जे तक पहुँच नहीं पा रहा था, तब उसने उपाय सोचा और श्यामा से नहाने की चौकी माँगी और उस पर स्टूल रख दिया। अब स्टूल पर चढ़ने से वह छज्जे तक पहुँच गया। उसकी यह युक्ति देखकर श्यामा ने ऐसा सोचा

Q.8. क्या 'रक्षा में हत्या' शीर्षक सही है? अपने विचार दें?

Ans. केशव और श्यामा दोनों बच्चे सच्चे और निश्छल मन के थे। उन्होंने जो भी उपाय किया वह चिड़िया की मदद करने और अंडों की रक्षा करने के लिए ही किया। उन्हें यह मालूम नहीं था कि चिड़िया के अंडों को छूना नहीं चाहिए इसलिए केशव से भूल हो गई और अंडों की रक्षा करने के जोश में उनकी हत्या हो गई। इसलिए यह शीर्षक सही है।

Q.9. इन उर्दू शब्दों के हिन्दी पर्याय लिखें। —

Ans.

सवाल-जवाब — प्रश्न उत्तर	फ़ैसला — निर्णय
ज़रूर — अवश्य	मंज़ूर — स्वीकृत
ख़याल — विचार	ज़मीन — धरती

Scanned with CamScanner

इंतज़ार - प्रतीक्षा
ज़रा - थोड़ा
आहिस्ता - धीरे से

Q.10 इन हिंदी शब्दों के उर्दू पर्याय लिखें :-

व्यस्त - मसरूफ़
अंत - खत्म
प्रतिदिन - रोज़
रक्षा - हिफ़ाज़त
अनुमान - अंदाज़ा
अपराध - जुर्म

Q.11 इन शब्दों के भाववाचक संज्ञा रूप लिखें :-

घबराना - घबराहट
हँसना - हँसी
गंदा - गंदगी
जिज्ञासु - जिज्ञासा
गिरना - गिरावट
संतुष्ट - संतोष

Q.12. नीचे लिखे शब्दों से वाक्य बनाएँ :-

समस्या -
तरकीब -
अनमोल -
उत्सुक -
व्यवहार -

Q.13 इन मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाएँ :-

चेहरे का रंग उड़ना -
दिल में काँपना -
चटनी बनाना
सहमी हुई आँखें -

Scanned with CamScanner